राज्य वन अनुसन्धान संस्थान जबलपुर द्वारा अखिल भारतीय बाघ आंकलन 2026 के अंतर्गत कंप्यूटर ऑपरेटर्स का एम–स्ट्राइप्स सॉफ्टवेयर पर एक–एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला, दिनांक 25 एवं 26 नवंबर 2025

मध्य प्रदेश वन विभाग अपने टाइगर स्टेट का दर्जा बरकरार रखने के लिए बीते हुए चक्रो की भांति अखिल भारतीय बाघ आकलन के छठवें चक्र में पूरी तरह से प्रयासरत जिसके परिप्रेक्ष्य राज्य वन अनुसन्धान संसथान जबलपुर द्वारा अखिल भारतीय बाघ आकलन के छठे चक्र के अंतर्गत कंप्यूटर ऑपरेटरों के लिए दिनांक 25 एवं 26 नवंबर 2025 को एक–एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें अखिल भारतीय बाघ आकलन के नोडल अधिकारी, मध्य प्रदेश द्वारा निर्धारित 83 वन मंडलों, टाइगर रिजर्व, संरक्षित क्षेत्रों एवं निगम मंडलों के कुल 169 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके माध्यम से प्रदेश के सभी वन मंडलों की लगभग 8500 बीटों से शाकाहारी एवं मांसाहारी वन्यप्राणियों के आँकडे संगृहीत किए जाएंगे। उक्त प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रतिभागियों को एम–स्ट्राइप्स डेस्कटॉप एप्लीकेशन पर प्रशिक्षण दिया गया, जिससे प्रदेश के सम्पूर्ण वनमंडलो से एकत्रित किए गए आँकडे सटीक रूप में संधारित किए जा सकें एवं राज्य वन अनुसंधान संस्थान के माध्यम से भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून के टाइगर सेल को प्रदान किए जा सकें। उक्त प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रतिभागियों को बारीकी से सिखाया गया कि बाघ आकलन के निर्धारित मापदंडों के आधार पर डाटा को कंप्यूटर में किस प्रकार दर्ज (संधारित) किया जाएगा, इसके साथ–साथ प्रशिक्षार्थियों को प्रदेश के टाइगर स्टेट के दर्जे को बरकरार रखने के लिए शपथ दिलाई गई।

उक्त कार्यशाला का शुभारंभ संस्थान के संचालक श्री प्रदीप वासुदेवा द्वारा किया गया। उनके साथ उपसंचालक श्री संदीप फेलोज एवं जबलपुर वन मंडल के वनमंडलाधिकारी श्री ऋषि मिश्रा उपस्थित रहे। प्रशिक्षण कार्यशाला में भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून एवं राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के वैज्ञानिक दल द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। उक्त कार्यशाला में भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून की ओर से श्री मनीष एवं श्री ओमकार नार के द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जबकि राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की ओर से वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार, श्री एस.एस. रघुवंशी, श्रीमती ज्योत्सना गुप्ता, श्री राजेश दीक्षित, श्री बलराम लोधी, मो अशद मंसूरी, अभिलाषा बर्मन, कुमारी दीप्ति सोनावने, कुमारी पियूषा विश्वास, संत कुमार, अर्घ्य कुसुम दास, सूर्यांश दुबे आदि की उपस्थित में कार्यशाला सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

इससे पूर्व अखिल भारतीय बाघ आकलन–2026 हेतु प्रदेश के सतपुडा टाइगर रिजर्व में मुख्य वन संरक्षक स्तर की कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इसके अलावा माधव टाइगर रिजर्व, पन्ना टाइगर रिजर्व, कान्हा टाइगर रिजर्व एवं सतपुडा टाइगर रिजर्व में वनमंडलाधिकारी स्तर की कार्यशालाएँ आयोजित की गई थीं।

साथ ही, प्रदेश के 9 टाइगर रिजर्व (पेंच, कान्हा, बांधवगढ, सतपुडा, पन्ना, माधव, वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व, रातापानी एवं संजय–डुबरी टाइगर रिजर्व) तथा 2 संरक्षित क्षेत्रों (गांधीसागर अभयारण्य एवं खिवनी वन्यजीव अभयारण्य) में उपवनमंडलाधिकारी, परिक्षेत्र अधिकारी एवं फॉरेस्ट गार्ड स्तर की कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया था।

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

लय तहसील जबलपुर

जाते हैं। लेकिन उनकी दूरी खत्म होते ही फिर से कब्जा जम जाता है।

नौदरा ब्रिज रोड पर पार्क वाहन।

धीमी गति के कारण जाम आम बात बन गया है।

एक दिसंबर से काम : जबलपुर में प्रदेश के 40 फॉरेस्ट डिवीजन के अधिकारियों को दिया गया प्रशिक्षण

बाघ गणना का डेटा 'एनक्रिप्टिड' होगा, लोकेशन रहेगी सुरक्षित

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जबलपुर. देश में बाघों की असली तस्वीर जानने की सबसे बड़ी कवायद एक दिसंबर से शुरू हो रही है। बाघों की गणना के लिए कैमरा ट्रैप लगाए जाएंगे। एविडेंस में मल, पगमार्क, विस्टा समेत अन्य साक्ष्य भी शामिल किए जाएंगे। यह गिनती डिजिटल प्लेटफॉर्म पर होगी, जिससे बाघ और तेंदुए जैसे वन्यप्राणियों की वास्तविक लोकेशन सुरक्षित रहे। तहसील ऑफिस में कार्यशाला में 40 फॉरेस्ट डिवीजन के कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया।

169 प्रतिभागी प्रदेशभर से आए
80 हजार बीट देशभर में
3500 बीटों में प्रदेश में होगी गणना
40 वन मंडलों ने की सहभागिता
15 किमी का होगा रेल टेल

इनका दिया प्रशिक्षण

डेटा संग्रहित करना। डेटा में सुधार।
वन्य जीवों के पगमार्क देखना।
सर्वर में जानकारी फीड करना।

ट्रेनिंग में विश्वास, संत कुमार, अर्घ्य कुसुम दास, सूर्यांश दुबे सहित भोपाल, रतलाम, बालाघाट, मंडला, कान्हा, शहडोल वनमंडल के अफसर सहित अन्य मौजूद थे।

गलत जानकारी दर्ज करना संभव नहीं

प्रशिक्षण का आयोजन नेशनल वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट देहरादून से आए एक्सपर्ट और स्टेट फॉरेस्ट इंस्टीट्यूट, वन विभाग के निर्देशन में किया गया। देहरादून से आए फील्ड एक्सपर्ट मनीष कुमार, ओमाकार नार ने बताया कि डिजिटल प्रणाली से जंगल की सभी सूचनाएं सुरक्षित रहेंगी। डेटा इनक्रिप्टेड होने के कारण इसे कोई नहीं देख सकेगा। सॉफ्टवेयर में फॉल्स डाटा दर्ज करना संभव नहीं होगा। हर सूचना ऑन-द-स्पॉट जीपीएस लोकेशन के साथ फोटो, वीडियो सहित अपलोड की जाएंगी। इससे डेटा में छेड़छाड़ की गुंजाइश नहीं रहेगी। एसएफआरआइ के नोडल गणना ट्रेनिंग ऑफिसर डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार ने बताया कि टाइगर स्टेट, तेंदुआ स्टेट के दर्जे को बरकरार रखने बीते चक्रों की तरह अभा बाघ आकलन के प्रयास किए जा रहे हैं। कार्यशाला में एसएफआरआइ संचालक प्रदीप वासुदेवा, डिप्टी डायरेक्टर संदीप फैलोज, डीएफओ ऋषि मिश्रा, एसएस रघुवंशी, ज्योत्सना गुप्ता भी मौजूद रहे।

SUZUKI ARENA

'टाइगर स्टेट' का दर्जा बरकरार रखने प्रशिक्षण शुरू

नईदुनिया प्रतिनिधि, जबलपुर: दुनिया के सबसे बड़े वन्यजीव सर्वेक्षण अखिल भारतीय बाघ आकलन 2026 को बेहतर तरीके से करने व मध्य प्रदेश का 'टाइगर स्टेट' का दर्जा बरकरार रखने के लिए राज्य ने तैयारी शुरू कर दी है। छठे चक्र में बाघ आकलन की प्रक्रिया को सबसे पहले मध्य प्रदेश ने शुरू किया है।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में दो दिन तक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें प्रदेश के 83 वन मंडलों, टाइगर रिजर्व, संरक्षित क्षेत्रों और निगम मंडलों से कुल 169 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को डेस्कटॉप एप्लीकेशन का उपयोग सिखाया गया, ताकि प्रदेशभर से

शुभारंभ करते राज्य वन अनुसंधान संस्थान के संचालक प्रदीप वासुदेवा व अन्य। ●सौ. आयोजक

एकत्रित आंकड़ों को सटीक, व्यवस्थित और वैज्ञानिक ढंग से संधारित किया जा सके। शुभारंभ राज्य वन अनुसंधान संस्थान के संचालक प्रदीप वासुदेवा द्वारा किया गया। इस दौरान उपसंचालक संदीप फेलोज और जबलपुर वन मंडल के वनमंडलाधिकारी ऋषि मिश्रा उपस्थित रहे। प्रशिक्षण भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून और राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के वैज्ञानिक दल द्वारा प्रदान किया गया।

देशबन्धु
Influencing Public Opinion Since 1959
27 Nov 2025 • Page 5 • Jabalpur

जिला दंडाधिकारी द्वारा व्यापक जनहित को देखते हुए तथा नागरिकों को ट्राफिक जाम एवं

गया है जिनसे किसी भी प्रकार की कानून व्यवस्था की स्थिति निर्मित हो सकती हो।

प्रदेश को एक बार फिर टाइगर स्टेट का दर्जा दिलाने हर स्तर पर जुटा राज्य वन अनुसंधान केन्द्र

जबलपुर, देशबन्धु। मध्य प्रदेश अपने 'टाइगर स्टेट' का दर्जा बरकरार रखने के लिए बीते हुए चक्रो की भांति अखिल भारतीय बाघ आकलन के छठवें चक्र में पूरी तरह से प्रयासरत है।

तत्संबंध में मप्र वन विभाग द्वारा पूर्व में सम्पूर्ण वनमंडलो से बाघ एवं अन्य वन्य प्राणियों के आंकड़े (डाटा) एकत्रित करने हेतु अधिकारी से लेकर क्षेत्रीय अमले तक विभिन्न चरणों में प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित की गई थी ।

कार्यशाला में अखिल भारतीय बाघ आकलन के नोडल अधिकारी, मध्य प्रदेश द्वारा निर्धारित 83 वन मंडलों, टाइगर रिजर्व, संरक्षित क्षेत्रों एवं निगम मंडलों के कुल 169 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके माध्यम से प्रदेश के सभी वन मंडलों की लगभग 8500 बीटों से शाकाहारी एवं मांसाहारी वन्यप्राणियों के आँकड़े संगृहीत किए जाएंगे। उक्त प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रतिभागियों को (एम-स्ट्राइप्स) डेस्कटॉप एप्लीकेशन पर प्रशिक्षण दिया गया, जिससे प्रदेश के सम्पूर्ण वनमंडलो से एकत्रित किए गए आंकड़े सटीक रूप में संधारित किए जा सकें एवं राज्य वन अनुसंधान संस्थान के माध्यम से भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून के टाइगर सेल को प्रदान किए जा सकें।

उनके साथ उपसंचालक संदीप फेलोज एवं जबलपुर वन मंडल के वनमंडलाधिकारी ऋषि मिश्रा उपस्थित रहे। प्रशिक्षण कार्यशाला में भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून एवं राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के वैज्ञानिक दल द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

उक्त कार्यशाला में भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून की ओर से मनीष एवं ओमकार नार के द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जबकि राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की ओर से वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार, एसएस रघुवंशी, ज्योत्सना गुप्ता, राजेश दीक्षित, बलराम लोधी, कुमारी दीप्ति सोनावने, कुमारी पियूषा विश्वास, संत कुमार, अर्घ्य कुसुम दास, सूर्यांश दुबे आदि की उपस्थित में कार्यशाला सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

दिसंबर में होनी है गणना 'टाइगर स्टेट' का खिताब रहे बरकरार

बाघों की गणना के लिए देश में सबसे पहले मध्यप्रदेश में दिया गया प्रशिक्षण

भास्करे | जबलपुर

अखिल भारतीय बाघ आकलन के छठे चक्र के अंतर्गत देश में सबसे पहले मध्यप्रदेश में कम्प्यूटर ऑपरेटरों को प्रशिक्षण दिया गया। इसके लिए 25 एवं 26 नवंबर को वन मंडल कार्यालय में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें राज्य वन अनुसंधान के वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला में योजना के नोडल अधिकारी, मध्य प्रदेश द्वारा निर्धारित 83 वन मंडलों, टाइगर रिजर्व, संरक्षित क्षेत्रों एवं निगम मंडलों के कुल 169 प्रतिभागियों ने भाग लिया। योजना के मुताबिक प्रदेश के सभी वन मंडलों की लगभग 8500 बीटों से शाकाहारी एवं मांसाहारी वन्य प्राणियों के आंकड़े संग्रहित किए जाएंगे।

मोबाइल एप से होगा डाटा कलेक्शन

इसमें प्रतिभागियों को एम-स्ट्राइप्स, डेस्कटॉप एप्लीकेशन पर प्रशिक्षण दिया गया, जिससे एकत्रित किए गए आंकड़े सटीक रूप में संधारित किए जा सकें एवं संस्थान के माध्यम से भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून के टाइगर सेल को प्रदान किए जा सकें। इस दौरान डीएफओ ऋषि मिश्रा, एसएफआरआई के संचालक प्रदीप वासुदेवा, उपसंचालक संदीप फेलोज, डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार एवं देहरादून से आए वैज्ञानिक मनीष एवं ओमकार नार विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मप्र को प्राप्त है 'टाइगर स्टेट' का दर्जा

बता दें कि मध्यप्रदेश को टाइगर स्टेट का दर्जा प्राप्त है। यह दर्जा वर्ष 2018 में मिला था जब प्रदेश में 526 टाइगर थे। वर्ष 2022 में जब पुनः आकलन हुआ तो टाइगर की संख्या 785 हो गई एवं तेंदुओं की संख्या 3907 दर्ज की गई। अब 2026 में गणना होगी, अभियान की शुरुआत 1 दिसम्बर 2025 से होने वाली है। जानकारों का कहना है कि प्रदेश का टाइगर स्टेट का दर्जा आगे भी बरकरार रहने वाला है। पी-4

टाइगर स्टेट के दर्जे को बरक़रार रखने दिलाई शपथ

देश में सबसे पहले प्रशिक्षण देने की शुरूआत, जबलपुर से बाघों की गणना के लिए दिया जाएगा प्रशिक्षण

नवभारत, जबलपुर। बाघों की गणना के लिए देश में सबसे पहले मध्यप्रदेश में प्रशिक्षण देने की शुरूआत जबलपुर से हुई है। जानकारी के अनुसार अखिल भारतीय बाघ आकलन के छठे चक्र के अंतर्गत कंप्यूटर ऑपरेटरों के लिए एक-एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें अखिल भारतीय बाघ आकलन के नोडल अधिकारी, मध्य प्रदेश द्वारा निर्धारित 83 वन मंडलों, टाइगर रिजर्व, संरक्षित क्षेत्रों एवं निगम मंडलों के कुल 169 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके माध्यम से प्रदेश के सभी वन मंडलों की लगभग 8500 बीटों से शाकाहारी एवं मांसाहारी वन्यप्राणियों के आँकड़े संगृहीत किए जाएंगे। उक्त प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रतिभागियों को डेस्कटॉप एप्लीकेशन पर प्रशिक्षण दिया गया, जिससे प्रदेश के सम्पूर्ण वनमंडलो से एकत्रित किए गए आँकड़े सटीक रूप में संधारित किए जा सकें एवं राज्य वन अनुसंधान संस्थान के माध्यम से भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून के टाइगर सेल को प्रदान किए जा सकें। इसके साथ-साथ प्रशिक्षार्थियों को प्रदेश के टाइगर स्टेट के दर्जे को बरक़रार रखने के लिए शपथ दिलाई गई। गौरतलब है कि मध्यप्रदेश को टाइगर स्टेट का दर्जा प्राप्त है। यह दर्जा वर्ष 2018 में मिला था जब प्रदेश में 526 टाइगर थे। वर्ष 2022 में टाइगरों की संख्या 785 हो गई वहीं तेंदुओं की संख्या 3907 दर्ज की गई थी। अब गणना 2026 में होगी। जानकारों का कहना है कि टाइगर स्टेट का दर्जा आगे भी बरकरार रहने वाला है।

इन्होंने दिया प्रशिक्षण

प्रशिक्षण कार्यशाला में भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून की ओर से मनीष एवं ओमकार नार के द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जबकि राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की ओर से वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार, एस.एस. रघुवंशी, ज्योत्सना गुप्ता, राजेश दीक्षित, बलराम लोधी, कुमारी दीप्ति सोनावने, कुमारी पियूषा विश्वास, संत कुमार, अर्घ्य कुसुम दास, सूर्यांश दुबे आदि की उपस्थित में कार्यशाला सफलतापूर्वक संपन्न हुई। कार्यक्रम में राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के संचालक प्रदीप वासुदेवा , उपसंचालक संदीप फेलोज एवं जबलपुर वन मंडल के अधिकारी ऋषि मिश्रा उपस्थित रहे।

27 नवंबर 2025 गुरुवार
विक्रम 2082, हिजरी 1447 अगहन शुक्ल सप्तमी
बदलते जमाने का अखबार
पीपुल्स समाचार
स्थापना वर्ष 2009
मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और नई दिल्ली से प्रकाशित
जबलपुर
12 पृष्ठ ₹ 3.00 ■ वर्ष-16 ■ अंक-335
आज थैंक्स गिविंग डे
epapers.peoplessamachar.in | peoplesupdate.com | @PeoplesUpdate | @peoplesupdateofficial | PeoplesUpdateOfficial | whatsapp 9644644460 | @peoplesupdateofficial

प्रदेश में बाघ आकलन के छठे चक्र में 8500 बीट से आंकड़े जुटाने की है मुश्किल चुनौती

पीपुल्स संवाददाता ● जबलपुर
मो.नं. 9713230229

मध्य प्रदेश अपने 'टाइगर स्टेट' के दर्जे को बनाए रखने के लिए अखिल भारतीय बाघ आकलन के 6वें चक्र की तैयारी तेज चल रही है। गणना में बाघ और अन्य वन्य प्राणियों के आंकड़ों को सटीक रूप से एकत्रित करने के लिए प्रदेशभर के वन मंडलों में कार्यरत कम्प्यूटर ऑपरेटर्स को ट्रेंड किया जा रहा है।

जबलपुर में आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (एसएफआरआई) के संचालक प्रदीप वासुदेवा ने किया। इस अवसर पर उपसंचालक संदीप फेलोज और जबलपुर डीएफओ ऋषि मिश्रा भी उपस्थित रहे।

दो दिन की ट्रेनिंग में एक्सपर्ट्स ने सिखाई तकनीक

एसएफआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार ने बताया कि दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला में 83 वन मंडलों, टाइगर रिजर्व, संरक्षित क्षेत्रों और निगम मंडलों से कुल 169 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का उद्देश्य प्रदेश के 8500 बीट से शाकाहारी और मांसाहारी वन्य प्राणियों के आंकड़े एकत्रित करना है। इस प्रक्रिया के माध्यम से डेस्कटॉप एप्लीकेशन पर डेटा एकत्र किया जाएगा, जिससे बाघ आकलन के आंकड़े सटीक रूप से संधारित किए जा सकेंगे। इन आंकड़ों को भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून के टाइगर सेल को सौंपा जाएगा।

इन्होंने दी ऑपरेटर्स को ट्रेनिंग

इस कार्यशाला में मनीष और ओमकार नार (भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून) तथा डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार, एसएस रघुवंशी, ज्योत्सना गुप्ता, राजेश दीक्षित, बलराम लोधी, कुमारी दीप्ति सोनावने, कुमारी पियूषा विश्वास, संत कुमार, अर्घ्य कुसुम दास और सूर्यांश दुबे (राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर) ने प्रशिक्षण दिया।